REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

सूचना, समाज और सोशल मीडिया (फेसबुक के विशेष सन्दर्भ में)

संतोष मिश्रा[1] , डॉ. अख्तर आलम[2]
[1]शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

प्रस्तावना

मीडिया और मनुष्य का नाता बहुत पुराना है यायों कहें मीडिया और समाज का संबंध शायद उतना ही पुराना है जितना पुराना हमारा समाज। समय के साथ मीडिया में नए आयाम जुड़ते गए। इंग्लैंड में एडमंडबर्कने मीडिया कोलोकतंत्र का चौथास्तम्भकहा, जिसका आधार मीडिया का सामाजिक जिम्मेदारियों के साथ गहरा जुड़ाव से रहा है। भारतमेंआजादीसेपूर्व मीडिया को सामाजिक परिवर्तन के एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया। राजाराममोहन राय, जुगलकिशोर शुक्ल, बंकिमचंद्र चटर्जी, राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द, निखिल चक्रवर्ती, मुंशी प्रेमचंद और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय जैसे महान कलमकारों ने पत्रपत्रिकाओं को जनजागरणका अहम् हथियार बनाया जिनका उद्देश्य समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना था। राजा राम मोहन राय जैसे लोगों ने सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा प्रणाली आदि के खिलाफ लिखा। निखिल चक्रवर्ती बंगाल के अकाल की भयावहता के बारे में लिखा, मुंशी प्रेमचंद और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय सामंती प्रथाओं और महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ लिखा। अपनी शुरूआत के दिनों में पत्रकारिता हमारे देश में एकमिशन के रूप में जन्मी थी। जिसका उद्देश्य सामाजिक चेतना को और अधिक जागरूक करना था।

जब भी मीडिया और समाज की बात आती है तो मीडिया को समाज में जागरूकता पैदा करने वाले एक साधन के रूप में देखा जाता है, जो लोगों को सही व गलत करने की दिशा में एक प्रेरक का कार्य करता हुआआया है।मीडियासरकारीप्रस्तावों, योजनाओं,कार्यक्रमों व नीतियों के बारे में लोगों के बीच सूचना देने और जागरूकता बढ़ाने का कार्य करता है जैसे कि जनता के प्रति शासन क्या कर रहा है या क्या करना चाहताहै। वहीं दूसरी तरफ जनता से संबन्धित मुद्दों,समस्याओं और जनमानसकी चिंताओं को सरकारी प्रतिनिधियों तक प्रभावी रूप से पहुंचाने मेंभीमीडिया की अहम भूमिका होतीहै। समाज में मीडिया की भूमिका सूचना प्रद एवं शिक्षा प्रद दोनों पहलुओं में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, जो कि जनसहभागिता को बढ़ाते हुए लोकतान्त्रिक/शासन व्यवस्था को प्रभावी व कुशलता प्रदान करने में सहायक होती है। पूर्वाग्रहों से मुक्त समाजकी समस्याओं पर राय व विश्लेषण करके एक संतुलित चेतना का विकास करते हुए मीडिया का कार्य अत्यंत ज़िम्मेदारी भरा होताहै।

अगरइतिहास के पन्नों में संचार के विकास पर नजर डाले तो हम पाते हैं कि संचार केउन तकनीकों को बहुत जल्दी स्वीकारकियागया जिन्हें समाज के नेतृत्वकारी तबके ने ज्यादासे ज्यादा इस्तेमाल किया। जर्मनी के सुनार जॉन गुटनबर्ग ने1445 ई के आस पास छपाई की तकनीक विकसित की। इससे अखबारों, पर्चों और इश्तेहार का प्रकाशन आसान हो गया। उस समय तात्कालिक राजनीति पर वर्चस्व रखने वाली शक्तियों ने इसे इस्तेमाल और परिष्कृत किया। धार्मिक प्रचार में लगे संगठनों नेअपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए छापेखाने का इस्तेमाल किया। लेकिन अख़बार, पर्चे या किताबें समाज के हर वर्ग के इस्तेमाल की चीज नहीं थीं। पर्चे और अख़बार में छपी सूचनाओं को पढ़ने के लिए शिक्षित होना जरूरी था। अखबारों को खरीद पाने के लिए उसके दाम का भुगतान कर पाने में सक्षम होना जरूरी था। यानि इन माध्यमों के जरिये समाज का एक छोटा सा हिस्सा आपस में संवाद करता था और उनकी बातें अन्य लोगों तक धीरे-धीरे पहुंचती थीं।

[1]. Retrieved fromhttp://www.newswriters.in/social-sphere-of-social-media on 2018/04/26.

परंतु सूचनाओं की इस गति को धारतब मिली जबइंटरनेटनेंसंचार के क्षेत्र मेंअपना कदम रखा। जोसमाज के नेतृत्वकारी तबकेसे हटकर समाज के हर उस व्यक्ति तक अपनी पहुँच बनाने में सफल हुई जिसको वास्तव में इसकी जरुरत थी। वैसे तो अपनी शुरुआती दौर में यह भी समाज के नेतृत्वकारी तबके तक ही सीमित थी।परन्तु अन्य माध्यमों से सस्ता होने,आसानपहुँच तथा उपयोगिता के कारणइसकी लोकप्रियतासमाज में बढ़ती गई।इंटरनेट की सबसे ज्यादा उपयोगिता तब और बढ़ गई जब लोगों को सोशल मीडिया जैसीप्लेटफॉर्म की पहचान हुई। जिसमें सबसे ज्यादा फेसबुक, लिंक्डइन, माइस्पेस, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब, फ्लिकर, टाइप पेड लाइव जर्नल, विकिपीडिया, विकिडॉट, डिलिशियस, डिक, रैडिट आदि नें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

शोधके उद्देश्य

फेसबुक इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया काएक सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाला प्लेटफॉर्म है जो हमारेबीचमेंबहुत तेजी से उभर कर आया।जिसनेसामाजिक गतिविधियों को समाज केउन सभी लोगों तक पहुँचाने तथा खुद को समाज से जोड़े रखने में अपनी सहभागिता दर्शायी है।फेसबुक इंटरनेट आधारित एक त्वरित माध्यम है इसका प्रभाव भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तनोंमें कितना और कैसे रहा है? जिसकोइस शोध में निम्नलिखित उदेश्यों के आधार पर जाननेकी कोशिश की गई है:

1. फेसबुकपर प्रस्तुत प्रमुख सामाजिक परिवर्तनों के विषयवस्तु का विश्लेषण करना।
2. फेसबुकपर प्रस्तुत सूचनाओं के अंतर्वस्तु का विश्लेषण करनाकरना।
3. फेसबुकपर प्रस्तुत सूचनाओं काप्रोपेगेंडाके निर्माण में भूमिका का अध्ययनकरना।
4. फेसबुक पर घटित प्रसिद्ध घटनाओं काअध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इसशोधको निम्नलिखित परिकल्पनाओं के अन्तर्गत रखकर पूर्ण किया गया है

1. फेसबुक नें सूचनाओं का लोकतंत्रीकरण किया है।
2. फेसबुक नें सूचनाओं के अभियक्ति का एक त्वरित प्लेटफार्मउपलब्ध किया है।
3. फेसबुक नें सामाजिक परिवर्तन में अहम् भूमिका निभाई है।
4. फेसबुक नें समाज को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया है।
5. फेसबुक नें युवावों को राजनीतिक सहभागिता प्रदान किया है।

शोध प्रविधि

अनुसंधान का प्रमुख लक्ष्य वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग द्वारा प्रश्नों के उत्तर खोजना है। इसका उद्देश्यअध्ययनरत समस्या के अंदर छिपी यथार्थता का पता लगाना या उन चीजों की खोज करना है जिसकी जानकारी समस्याओं के बारे में नहीं है। किसी भीविषय में शोध करते समय उस विषय में किन-किन शोध के प्रकार अर्थात् किस अनुसंधान के प्रकार का उपयोग किया गया है उस पर शोध का महत्त्व निर्भर करता है। प्रस्तुत वर्णनात्महक अनुसंधान मेंगुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।इस शोध केआंकड़ों को प्राप्त करने के लिए प्राथमिकतथाद्वितीयक दोनों स्त्रोतों का इस्तेमाल किया गया है।

फेसबुक

फेसबुक एक सोशल नेटवर्क साइट है जिसका शुभारंभ फरवरी2004 में मार्क ज़ुकरबर्ग ने फेसबुक इंक नामक कंपनी के अंतर्गत 'the facebook.com' नाम से वेब पर एक दूसरे से संपर्क करने के लिए किया था। उपयोगकर्ता ईमेल या मोबाइल नम्बर द्वारा सदस्यता प्राप्त कर इस साइट के माध्यम से अपनी स्वयं की प्रोफाइल, पसंद-नापसंद, पारिवारिक सदस्यों या मित्रों, कुछ ऐसे खास ग्रुप जहां सभी सदस्यगण एक से कार्यों के बारे में, अपने बारे में विभिन्न प्रकार की सूचनाएं तथा जानकारीयां शेयर करते हैं।यह वर्तमान समय में व्यक्ति से व्यक्ति के संपर्क की सबसे बड़ी सोशल साइट बन चुकी है। यह एक अद्भुत जनमाध्यम है जिसका अनुसरण और अनुकरण विश्वभर में किया जा रहा है। इस सशक्त जनमाध्यम पर उपयोगकर्ता दुनियाभर के तमाम लोगों से अपनी अभिव्यक्ति, चित्र, सूचनाएं तथा जानकारियां, राजनैतिक सोच साझा कर सकते हैं। इसके माध्यम से विश्वमें किसी भी स्थान से (जहां नेटवर्क उपलब्ध है) उनकी गतिविधियों के बारे में

कोई भी सूचना कुछ पल में ही आसानी से उपलब्ध हो जाती है।पिछलेवर्ष में जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार(जून 2017) फेसबुक ने नया मुकाम हासिल किया है। वर्तमान में इसके उपयोगकर्ताओं की संख्यालगभग2 अरब से अधिक है जो नियमित रूप से सक्रिय हैं। इस सोशल साइट पर सक्रिय प्रयोगकर्ताओं (जिन्होंने इसकी वेबसाइट या मोबाइल उपकरण के द्वारा पिछले 30 दिन में इस साइट का प्रयोग किया हो) की संख्या 2 अरब के आंकड़े को पार कर गई है। इस उपलब्धि को हासिल करने से वर्तमान में इसके प्रयोगकर्ताओं की संख्या7 में से 6 महाद्वीपों से अधिक है। 31 मार्च 2017 तक इसके प्रयोगकर्ताओं की संख्या1.94 अरब थी।[2]

वेस्टलिंग के मतानुसार"फेसबुक राजनीतिक समर्थकों को एकजुट, संगठित तथा सूचित करने का बेहतरीन साधन है।"[3]

प्रमुख सामाजिक मुद्दों की फेसबुक में प्रस्तुति:

1. निर्भया कांड

16 दिसंबर 2012 को दिल्ली में घटित निर्भया रेप एवं मर्डर मामले में सुप्रीम कोर्टद्वारामई 2017 के निर्णय में चारों दोषियों को फांसी की सजा सुनाई गयी। वर्ष 2012 में जब ये मामला सामने आया, तब देशभर में इसे लेकर जबर्दस्त गुस्सा देखा गया। इस मामले में दोषियों को फांसी की सजा दी जाये इसको लेकर देश के कई भागो में प्रदर्शन भी किये गये। जिसको देश की लगभग सभीमीडिया द्वारा प्रमुखता सेकवरकियागया। परंतु देश की प्रमुख मीडिया के साथ ही सोशल मीडिया विशेषकर फेसबुकभीइससे पीछे नहीं रहा।ऐसापहली बार देखने को मिला कि लोगोंद्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से अपनीप्रतिक्रिया को व्यक्त किया गया।इसकोसोशल मीडियाकेलगभग सभी प्लेटफार्मों परदेखा गया।परन्तु इन प्लेटफार्मों में भी सबसे ज्यादा फेसबुक पर देखने को मिला।यहाँ पर निर्भया रेप एवं मर्डर केस के बाद बनायीगईनिर्भया नाम के एक फेसबुक अकाउंट पर की गई प्रतिक्रियाओंका विश्लेषण प्रस्तुत कर अध्ययन किया गया है:

निम्नलिखित आंकड़ों को निर्भया नामक एक Facebook Account से लिया गया है जिसको16 दिसम्बर 2012 मेंबनाया गया परन्तु इस accountt पर पहला पोस्ट 07/07/2014 कोडाला गया। इसअकाउंट पर रेगुलर पोस्ट न होने के कारण07/07/2014 से16/12/2014 तककेतीसपोस्टों को आंकडे के तौर पर लिया गया।

1. 07/07/2014 को इस खाते पर पहला पोस्ट डाला गया जिसमेंदो पोस्टर एक साथ देखे गए।पहले पोस्टर में लिखा हुआ था 'आवाज दो' औरदूसरे पोस्टर में 'दामिनी आंदोलन'।इन पोस्टरों के साथ भीडकोभी एक साथ दिखायागया था।
2. उक्त पोस्ट के साथ ही 07/07/2014 को इस खाते पर तीन और पोस्ट डाले गये थे जिसके दूसरे पोस्ट में पुलिस प्रदर्शनकारियों पर लाठी से वार करतीहुई दिखती नजरआ रही है,तीसरे पोस्ट में पहले पोस्ट को दोबारा से पोस्ट किया गया और चौथे पोस्ट में कुछ लड़कियां दोषियों को फांसी की सजा की मांग के लिए प्रदर्शन करती हुई नजरआरही हैं।

[2]. लो.स.ना.सं. दि. 20.03.18

[3].Retrived fromwww.thenewvernacular.com/projects/facebook_and_political_communication.pdf on 12/04/2018.

3. 18/07/2014 को इस खाते पर कुल पांचपोस्टडाले गये जिसके पहले पोस्ट में दोषियों को फांसी की सजा की मांगकी फोटो (Hang the Rapists !) के माध्यम से दर्शाया गया, दूसरेऔर तीसरे और पांचवें पोस्ट में निर्भया को श्रंधांजलि अर्पित कियागया पोस्ट है तथा चौथे पोस्ट में चारों दोषियों को फांसीके फंदे के साथ दिखाने की अपील की गई है।

4. 25/07/2014 को इस खाते पर कुल नौपोस्ट डाले गये जिसका पहला पोस्ट इंडिया टुडे द्वाराट्विटर पर डाले गए ट्विट का है जिसमें मुंबई में हुए रेप के एक दोषी को बताने की कोशिश की गई। इस दिन के दूसरे पोस्ट कोटाइम्सऑफ़ इंडिया द्वाराट्विटर पर डाले गए ट्विट का है जिसमें बरेलीमें हुए रेप के एक दोषी को दर्शाने की कोशिश की गई। इसके अगले पोस्ट अर्थात इस दिन के तीसरे पोस्ट को PIB India द्वाराट्विटर पर डाले गए ट्विट का है जो 'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम केअंतर्गत अधिकारियों को चेतावनी देने से सम्बंधित था'। इसका चौथा और पाँचवा पोस्ट एक साथ वर्षीय लड़की के साथ हुये रेप से सम्बंधित था। इसका छठा, सातवां एवं आठवां पोस्ट भारत सरकार एवं भारतीय न्यायपालिका को चेतावनी देने से सम्बंधितथाजो निर्भया के दोषियों को जल्दीन्याय की मांग कर रहा था। तथा इस दिन का अंतिम पोस्ट दैनिक जागरण द्वाराट्विटर पर डाले गए ट्विट काथाजोमध्यप्रदेश के मुरैना जिले की अदालत ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए शादीशुदा महिला पर तेजाब फेंकने वाले आरोपी को फांसी की सजा सुनाईगई थी की ख़बर को पोस्ट किया गया था।

5. 16/12/2014को इस खाते पर कुल बारहपोस्ट डाले गये जिसकेलगभगहर पोस्ट पहले किये गए पोस्ट की पुनरावृत्ति थी सिवायइस दिन के चौथे पोस्ट को छोड़कर। परन्तु इसी दिन के चौथे पोस्ट को कुल छह बार पोस्ट किया गया।जैसे इस दिन का पहला और अंतिम पोस्ट 07/07/2014 को किये गए पोस्ट की पुनरावृत्ति थी। दूसराऔर तीसरा पोस्ट 18/07/2014 को किये गए पोस्ट की पुनरावृत्ति थी। इस दिन का छठा तथा नवां पोस्ट भी 18/07/2014 को किये गए पोस्ट की पुनरावृत्ति थी।एवं दसवां पोस्ट 07/07/2014को किये गए पोस्ट की पुनरावृत्ति थी।

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट हैकि निर्भया रेप कांड में दोषियों को सजा दिलाने के लिये बनाये गएफेसबुक अकाउंट से मुख्य रूप से इलेक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा दिखाए गये कुछ समाचारों से फ़ोटो लेकर उन्ही को बार-बार पोस्ट किया गया जो समय-समय पर लोगों को इसकी याद दिलाने में काफी हद तक कामयाब भी रहा जिसके वजह से मुख्य धारा की मीडिया का ध्यान इसकीओर पड़ती रही।जिससे इस दौरान देश में हुए किसी भी प्रकार की घटना जो स्त्रियों से संबंधित रहती थी उसको निर्भया रेप कांड की याद दिलाने में काफी हद तक इसके द्वारा जोड़कर देखने की कोशिश की गई। यही कारणरहा की निर्भया कांड में संलिप्त दोषियों को फांसी की सजा सुनायी गयी और देशके कानून मेंसरकार को संशोधन करना पड़ा। निर्भया कांड के दोषियों को सजा दिलाने में इसने उत्प्रेरक की तरह कार्य कियाजो की इससे पहले कोई भी ऐसा माध्यम नहीं था जो इस तरह के कार्यों में अपनी भूमिका अदा करसके।

2. अन्ना हजारे आन्दोलन

जनलोकपालविधेयक (नागरिक लोकपाल विधेयक) केनिर्माणकेलिएअन्ना हजारे आन्दोलन काअपने अखिल भारतीय स्वरूप में 5 अप्रैल 2011 को समाजसेवी अन्ना हजारे एवं उनके साथियों के द्वाराजंतर-मंतर पर शुरु किए गए अनशन के साथ आरंभ हुआ, जिनमें मैग्सेसे पुरस्कार विजेता अरविंद केजरीवाल, भारत की पहली महिला प्रशासनिक अधिकारी किरण बेदी, प्रसिद्ध लोकधर्मी वकील प्रशांत भूषण, इत्यादि शामिल थे। इन्होंने भारत सरकार से एक मजबूत भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल विधेयक बनाने की माँग की थी और अपनी माँग के अनुरूप सरकार को लोकपाल बिल का एक मसौदा भी दिया था। यह आंदोलन जेपी आंदोलन के बाद और2011-12 का एक बड़ा आंदोलन था। अन्ना हजारे का आंदोलन भ्रष्टाचार के विरूद्ध, 'जन लोकपाल बिल' बनाने के लिए किया गया था। भ्रष्टाचार विरोधी भारत (इंडिया अंगेस्ट करप्शन) नामक गैर सरकारी सामाजिक संगठन के अंतर्गत न्यायमूर्ति संतोष हेगड़ेवरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण, मैग्सेसे पुरस्कार विजेता सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद केजरीवाल ने यह बिल भारत केविभिन्न सामाजिक संगठनों और जनता के साथ व्यापक विचार विमर्श के बाद तैयार किया था। इसे लागू करने के लिए प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और गांधीवादी अन्ना हजारेके नेतृत्व में5 अप्रैल 2011 में अनशन शुरू किया गया। 16 अगस्त में हुए जन लोकपाल बिल आंदोलन2011 को मिले व्यापक जन समर्थन ने मनमोहन सिंह के नेतृतव वाली भारत सरकार को संसद में प्रस्तुत जानकारी लोकपाल बिल के बदले एक सशक्त लोकपाल के लिए सहमत होना पड़ा।''[4]यहाँ पर अन्ना हजारे के ऑफिसियलफेसबुक अकाउंट पर की गई प्रतिक्रियाओंका विश्लेषण प्रस्तुत कर अध्ययन किया गया है:

[4]. मुक्त ज्ञानकोष विकिपीडिया से.

निम्नलिखित फेसबुक अकाउंट को अन्ना हजारे के ऑफिसियल अकाउंट के तौर पर बनाया गया जिस पर पहला पोस्ट05/11/2012कवर फोटो के अपडेट के रूप में देखा गया। इसअकाउंट पर रेगुलर पोस्टन होने के कारण05/11/2012से23/02/2013 तककेतीसपोस्टों को आंकडे के तौर पर लिया गया।

1.05/11/2012 को इस खाते पर पहला पोस्ट अपडेट के रूप में डाला गया। इस पोस्ट मेंअन्ना हजारे के फोटो के साथ मेंCome together …Build Nation एवं'युवा ही इस देश का भविष्य बदल सकता है',लिखा गयाथा।

2. 06/11/2012 को कुल तीन पोस्ट किये गए। पहले पोस्ट में अन्ना को फोटो को पोस्ट किया गया था जो अनशन के दौरान ली गई थी। दूसरे पोस्ट में 'Join Movementagainst Corruption' लिखा गया तथा तीसरे पोस्ट में लिखा गया था कि यह अन्ना हजारे का ऑफिसियल फेसबुक अकाउंटहै।

3. 26/11/2012 को दो पोस्ट डाले गए जिसके पहले पोस्ट में जनलोक्पाल बिल की रुपरेखा को अपडेट किया गया था तथा दूसरे पोस्ट भी जनलोकपाल बिल की रुपरेखा को ही पोस्ट किया गया।

4. इस दिन कुल दो पोस्ट किया गया था जिसकेपहले में पोस्ट में अन्ना द्वारा रालेगांवसिद्धि में दीपावली मानते हुए फोटो को पोस्ट किया गया था।तथा दूसरे पोस्ट में अन्ना द्वारा आह्वान करते हुएमराठी में लिखा गया पोस्टर था।

5. 30/11/2012 को कुल तीन पोस्ट डाले गए और तीनों पोस्ट भ्रष्टाचार के खिलाफ छेड़ते हुए मुहिम के लेटरकोपोस्ट किया गया था।

6. 12/12/2012 को अन्ना हजारे द्वारा वाराणसी में किये गये प्रदर्शन की फोटो को पोस्ट किया गया था।

7. 19/12/2012 को दिल्ली में हुए सामूहिक बलात्कार के दोषियों को फांसी देने कीअपील करते हुए पोस्ट को डाला गया था।

8. 23/12/2012 को दो पोस्ट किये गए जिसके पहले पोस्ट में दिल्ली गैंग रेप को दोषियों को के खिलाफ यह लिखकर पोस्ट किया गया कि देशवासियों में बहुत गुस्सा है।जिसको कोई भी कमेन्ट लाइक और शेयर नहीं मिले वहीं दुसरे पोस्ट को अन्नाहजारे द्वारा रालेगांव सिद्धि में भ्रष्टाचार के खिलाफ दिए जा रहे भाषण के फोटो को पोस्ट किया गया।

9. 25/12/2012 को अन्ना द्वारा दो पोस्ट डाले गए जिसके पहले और दूसरे दोनों पोस्ट में दिल्ली गंग रेप के खिलाफ रालेगांव सिद्धि में लोगों द्वारा कैंडल मार्च निकालकर दोषियों को फांसी देने की मांग कर रही जनता की फोटो थी।

10. 01/01/2013 को मराठी में लिखे एकप्रेस नोट को पोस्ट किया गया।

11. 02/01/2013 को भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलन के वेबसाईट का शुभारम्भ करते हुए अन्ना के साथ किरण बेदी की फोटो को पोस्ट किया गया।

12. 13/012013 को भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन न्यास की ऑफिस के अवसर पर ली गई फोटो को पोस्ट किया गया था।

13. 18/01/2013 के पोस्ट में अन्ना द्वारा कहा गया कि प्रधानमंत्री नें आश्वासन दिया है लोकपाल बिल पारित करने की।

14. 25/01/2013 कोदो पोस्ट किए गए जिसके पहले पोस्ट में देशवासियों को प्रजातंत्रके दिन की हार्दिक बधाइयाँ देने से संबंधित पोस्ट किया गया। तथा दूसरा पोस्ट अन्ना द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग करते हुए फोटो को पोस्ट किया गया।

15. 26/01/2013 को रालेगढ़ सिद्धि केएक स्कूल में गणतंत्र दिवसपर ली गई फोटो को पोस्ट किया गया।

16. 28/01/2013 को चलो पटना के पोस्टर के साथ अन्ना को पोस्ट किया गया जो भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन का दूसरा चरण दर्शाते हुए दिखाया गया और जिसको 27 लाइक्स, 0 कमेन्ट तथा 28 बार शेयर किया गया।

17. 17/02/2013 को भ्रष्टाचार विरोधी जन आन्दोलन का दूसरा चरण दर्शाते हुएपोस्टर को पोस्ट किया गया जसमें हैदराबाद, उन्नाव(उत्तर प्रदेश), और बिदर (कर्नाटक) में आंदोलन के तारीख को दर्शाया गया था।

18. 19/02/2013 को अन्ना द्वारा एक पोस्ट की गई जिसमें उन्होंने सरकार से सभी शासकीय कार्यों को ऑनलाइन करने की अपील की थी ।

19. 21/02/2013 कोदो पोस्ट डाले गए पहला पोस्ट पटना में अन्ना द्वारा किये गए जन आंदोलन की फोटो को पोस्ट किया गया।तथादूसरा पोस्ट उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में अन्ना द्वारा किये गए जनआंदोलन की फोटो को पोस्ट किया गया।

20. 23/02/2013 को विभिन्न जन आन्दोलनों के सभाओं के तारीख कोपोस्टर के रूप में पोस्ट कियागया।

उपरोक्तआंकड़ोंको ध्यान से देखा जाये तो यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि सोशल मीडिया नें अन्ना हजारे को एक आदर्श पुरुष की छवि का निर्माण करने में अहम् भूमिका निभाया। जिसके आधार पर ही अन्ना हजारे की रैलियों में भारी भीड़ को देखा गया क्योंकि अन्ना हजारे द्वारा जितनी भी जन सभाएँ संबोधित कीजातीथीं उनकी सूचना सोशल मीडिया पर पहले से ही दे दी जाती थीं जिससे लोग भारी संख्या में उपस्थित हो सकें अर्थात अन्ना हजारे आन्दोलन में सोशल मीडिया एक प्रचार माध्यम के रूप में कार्य करता हुआ नजर आता है।यहीकारणरहा कि लोगों द्वारा अन्ना आंदोलन को भारी समर्थन प्राप्त हो सका अन्यथा यह संभव नहीं था कि कोई व्यक्ति रालेगढ़ सिद्धि (महाराष्ट्र) से चलकर दिल्ली की सरकार को अपनी सर्तों को मनवाने पर मजबूर कर सके।

शोध निष्कर्ष

सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को अपनी बात लोगोंतकपहुंचाने साथ ही शासन तक पहुंचाने काएक सशक्त औजारदिया है। सूचना का आदान-प्रदान जनमत तैयार करने, जनचेतना जाग्रत करने, विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने, विविध मुद्दों और आंदोलनों में भागीदार बनाने की दृष्टि से सोशलमीडिया एक सशक्त उपकरण है।सोशल मीडिया ने सूचना के लोकतंत्रीकरण का आभास जनमानस को कराया है। जिन मुद्दों पर आप अपनी राय एवंबात कह सकते हैं, दे सकते हैं, या जानना चाहते हैं कि लोग किन मुद्दों पर ज्यादा ध्यान देते हैं। किस प्रकार सोचते हैं? इस प्रकार के मुद्देसोशल मीडिया पर ही संभव हैं।

लोकतंत्रीकरण,'voice to voice'सोशल मीडिया की बदौलत ही संभवहोसकताहै। जितना सूचना का लोकतंत्रीकरण सोशल मीडिया ने किया है। उतना किसी अन्य मीडिया ने नहीं किया है। लोकतंत्र में सबसे बड़ी चीज यह है कि सूचनाओं का आदानप्रदान बिना किसी रुकावट के हो सके।यहाँ आमजन के मुद्दों को अपेक्षाकृत कम जगह मिलती है क्योंकि भारत में सोशल मीडिया अधिकांशतः राजनैतिक मुद्दों पर अधिक केंद्रित है। फिर भी, अन्य मंचों की तुलना में सोशल मीडिया ने लोगों को एक माध्यम ज़रूर मुहैया कराया है जहाँ पर वे अपनी बात उठा सकते हैं और उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

सुझाव

आज सोशल मीडिया विज्ञापन के जरिये लोगों द्वारा पैसा कमाने का आसन तथा शॉर्टकट रास्ता बन गया है जिससे लोगों को अपने साथ जोड़ने की होड़ सी लगी हुई हैइसके लिए यहलोगोंको किसी भी प्रकार की सूचना को पहुँचाने में पीछे नहीं हटते चाहे उसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध हो या ना और यही वह चीजें हैं जो लोगों को भ्रमित कर रही हैं।जिसके लिए एक बड़े जागरूकता कार्यक्रम चलाने की जरुरत महसूस की जा रही है।

आजसोशल मीडिया**"पब्लिक स्पेस"**न होकर यह बड़े-बड़े कारपोरेट घरानों के लिए **"न्यूज प्लेस"** बनकररह गया है। यहाँ तक राजनीतिक दल पहुंच गए हैंजिन्होंने खुद के आईटी सेल बना दिए गए हैं। हर पार्टी जिला स्तर पर आईटी सेलको एक्टिवेट कर रही हैं। जो लोगों को भ्रमाने मेंकिसीभी हद तक जाने को तैयार हैं।सरकार को ऐसी गतिविधियों से लोगों को हटाने के लिए कड़े से कड़े आईटी कानून को लागूकरने की जरुरत है।

संदर्भ सूची

1. Retrieved fromhttp://www.newswriters.in/social-sphere-of-social-media on 2018/04/26.
2. https://hindi.sahityapedia.com on 2018/04/10.
3. http://www.newswriters.in/ media-and-democracy on 2017/04/13.
4. पटेल, योगेश (2013). *सोशल मीडिया*, नई दिल्ली: पुस्तक महल।
5. अवस्थी, ब्रह्मादत्त (2012). *लोकतंत्र*, प्रभात प्रकाशन: नयी दिल्ली।
6. देव, राहुल, (2016). *सोशल मीडिया और भाषा*, आजकल, नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।